Mr.Sanjay Kumar
(Assistant Professor)
Dept.Of Psychology
C.M.J. College, Donwarihat
Khutauna,Madhubani
9905430675(Mobile/WhatsApp)
Email- sanjayuttam725@gmail.com

B.A. PART -I. PAPER-I

अधिगम: क्लासिकी अनुबंधन (LEARNING: CLASSICAL CONDITIONING)

अधिगम(learning)- अधिगम व्यवहार में वैसे परिवर्तन को कहा जाता है जो अभ्यास या अनुभूति के फलस्वरूप होता है तथा जिसका उद्देश्य व्यक्ति को अपने वातावरण के साथ समायोजन करने में मदद करना होता है। सीखने की प्रक्रिया को दर्शाने के लिए बहुत सारे मनोवैज्ञानिकों ने प्रयोग किए हैं। इन्हीं में से एक आई० पी० पैवलव द्वारा प्रतिपादित 'क्लासिकी अनुबंधन (classical conditioning)' है

क्लासिकी अनुबंधन(classical conditioning)- आई० पी० पैवलव(I.P.Pavlov) जो एक रूसी शरीर-वैज्ञानिक (physiologist) थे। उन्होंने पाचन क्रिया के दैहिकी (physiology) के अध्ययन के दौरान लारमय अनुबंधन(salivary conditioning) की घटना का अध्ययन किया और इससे संबंधित सीखने के एक सिद्धांत का प्रतिपादन किया जिसे 'अनुबंधित अनुक्रिया सिद्धांत' कहा जाता है। पैवलव ने अपने सीखने के सिद्धांत का आधार अनुबंधन को माना है। अनुबंधन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा उद्दीपक तथा अनुक्रिया के बीच एक साहचर्य स्थापित होता है।पैवलव के सीखने की इस अनुबंधन सिद्धांत को ही क्लासिकी अनुबंधन सिद्धांत(classical conditioning theory) या प्रतिवादी अनुबंधन सिद्धांत(respondent conditioning theory) या प्राचीन अनुबंधन या टाइप एस(type- s) अनुबंधन भी कहा जाता है।पैवलव के अनुसार जब कोई स्वाभाविक एवं उपयुक्त उद्दिपक को जीव के सामने उपस्थित किया जाता है तो वह उसके प्रति एक स्वाभाविक अनुक्रिया करता है। जैसे- गर्म बर्तन को छूते ही हाथ खींच लेना, भूखा होने पर भोजन देख कर मुंह में लार आना, कुछ ऐसी अनुक्रियाओं के उदाहरण है।जब इस स्वाभाविक एवं उपयुक्त उद्दिपक(natural stimulus) के ठीक कुछ सेकेंड पहले एक-दूसरा तटस्थ उद्दिपक(neutral stimulus) बार-बार उपस्थित किया जाता है तो कुछ प्रयास बाद उस तटस्थ उद्दिपक द्वारा ही स्वाभाविक अनुक्रिया(लार आना या हाथ खींच लेना) जो सिर्फ स्वाभाविक उद्दीपक के प्रति होती थी,उत्पन्न होने लगती है। जैसे-एक भूखे व्यक्ति के सामने घंटी बजा कर बार-बार भोजन दें तो कुछ प्रयासों के बाद मात्र घंटी बजते ही उस भूखे व्यक्ति के मुंह में लार आना प्रारंभ हो जाएगा।पैवलव ने तटस्थ उद्दिपक (घंटी) तथा स्वाभाविक अनुक्रिया (लार आना) के बीच स्थापित इस साहचर्य को ही सीखने की संज्ञा दी । जब तटस्थ उद्दीपक को किसी उपयुक्त एवं स्वाभाविक उद्दीपक के साथ बार-बार उपस्थित किया जाता है तो तटस्थ उद्दीपक के प्रति व्यक्ति वैसी ही अनुक्रिया करना सीख लेता है, जैसा कि वह उपयुक्त एवं स्वाभाविक उद्दीपक के प्रति करता है।पैवलव द्वारा प्रतिपादित यह सिद्धांत उनके द्वारा किए गए एक प्रयोग पर आधारित है, जो इस प्रकार से है-

पैवलव द्वारा किया गया प्रयोग- एक भूखे कुत्ते को एक ध्वनि-नियंत्रित प्रयोगशाला में एक विशेष उपकरण के सहारे खड़ा कर दिया गया। भूखे कुत्ते के सामने जैसे भोजन लाया जाता था, भोजन देखकर उसके मुंह में लार आ जाता था। कुछ प्रयासों के बाद भोजन देने के 400 से 500 मिली सेकंड पहले एक घंटी बजाई जाती थी। यह प्रक्रिया कुछ दिनों तक दोहराई गई तो यह देखा गया कि बिना भोजन आए ही मात्र घंटी की आवाज पर कुत्ते के मुंह में लार निकलना शुरू हो गया।पैवलव के अनुसार, घंटी की आवाज(उद्दीपक) तथा लार का स्राव(अनुक्रिया) के बीच एक साहचर्य(association) कायम हो गया यानी कुत्ता घंटी की आवाज पर लार का स्राव करने की क्रिया को सीख लिया। जिसे अनुबंधन की संज्ञा दी गई।

पैवलव कि इस प्रयोग पर ध्यान देने से स्पष्ट होता है कि पैवेलियन अनुबंधन(pavolovian conditioning) के मुख्यत: चार पक्ष है, जो इस प्रकार हैं-

1) स्वाभाविक उद्दीपक (unconditionedl stimulus:UCS)- स्वाभाविक उद्दीपक वैसे उद्दीपक को कहा जाता है जो बिना किसी पूर्व प्रशिक्षण के प्राणी में अनुक्रिया उत्पन्न करता है।पैवलव के प्रयोग में भोजन एक स्वाभाविक उद्दीपक है।

2) स्वाभाविक अनुक्रिया (unconditioned response: UCR) -स्वाभाविक उद्दीपक द्वारा उत्पन्न अनुक्रिया, स्वाभाविक अनुक्रिया कहलाती है पैवलव के प्रयोग में भोजन देखकर कुत्ते के मुंह में 'लार का स्राव होना' एक स्वाभाविक अनुक्रिया है।

3) अनुबंधित उद्दीपक(conditioned stimulus: CS)-अनुबंधित उद्दीपक वैसे उद्दीपक को कहा जाता है, जो स्वाभाविक उद्दीपक के साथ उपस्थित किया जाता है और यह प्राणी में स्वाभाविक अनुक्रिया की भांति ही अनुक्रिया उत्पन्न करता है।पैवलव के प्रयोग में 'घंटी की आवाज' एक अनुबंधित उद्दीपक का उदाहरण है।

4) अनुबंधित अनुक्रिया(conditioned response: CR)- जब अनुबंधित उद्दीपक स्वाभाविक उद्दीपक के साथ संयोजित किया जाता है तो कुछ प्रयासों के बाद अनुबंधित उद्दीपक के प्रति प्राणी ठीक वैसी ही अनुक्रिया करता है जैसा कि वह स्वाभाविक उद्दीपक के प्रति करता था इस तरह की अनुक्रिया को अनुबंधित अनुक्रिया कहा जाता है।पैवलव के प्रयोग में बिना भोजन उपस्थित हुए ही, 'घंटी की आवाज' सुनने पर ही कुत्ते में जो लार स्राव के अनुक्रिया हुई, वह अनुबंधित अनुक्रिया का उदाहरण है।

उपरोक्त प्रयोग के निम्नलिखित चरण हैं-

UCS. =~ UCR

UCS+CS. =~. UCR

CS. =~ CR

यद्यपि पैवलव के अनुबंधन सिद्धांत को विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अपने-अपने ढंग से आलोचना भी किया है परंतु पैवलव का सिद्धांत प्राणी सीखना के कुछ क्षेत्रों में अपनी सार्थकता बनाए हुए हैं। जो हमें दैनिक जीवन में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

04/08/2020. - Sanjay Kumar